10.

बंगला साहित्य, उड़िया साहित्य और हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

– डॉ. दिनेश श्रीवास *

सेमेस्टर – III, प्रश्नपत्र– IV (भारतीय साहित्य), इकाई 03

हमारा देश अनेक भाषाओं से समृद्ध है। यहाँ आर्य–द्रविड़ और अन्य भाषा परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। भारत में बोली जाने वाली एक अन्य भाषा परिवार है – नाग (चीनी, तिब्बती) परिवार। मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल और असम के कुछ क्षेत्रों में इस भाषा परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। इस भाषा परिवार का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, लेकिन देश के कई लोग इस भाषा परिवार से अपरिचित हैं। तात्पर्य है कि भारत में कई भाषा परिवार हैं। इसके अतिरिक्त कई भाषाएँ राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं, जैसे– हिंदी , बंगला, मराठी, उड़िया, तमिल, तेलुगू, गुजराती, पंजाबी, उर्दू आदि भाषाएँ। इन भाषाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल चुकी है।

हिंदी, बंगला और उड़िया का संबंध प्राचीन काल से है। सहजयानी चर्यापद उड़िया भाषा में मिलते हैं। चैतन्य महाप्रभु के समय से ब्रजभाषा और बंगला का घनिष्ठ संबंध था। उड़िया की लेखन शैली हिंदी के अधिक निकट है, अपेक्षाकृत बंगला के। उड़ियाभाषी राय रामानंद पटनायक, प्रताप रूद्र देव हिंदी में कविता लिखते थे। ये दोनों 15 वीं शताब्दी के विद्वान थे। इसके बाद 16वीं शताब्दी में उड़ियाभाषी दीन कृष्ण दास, बलराम दास, अनंत दास, पुरुषोत्तम अनंग, भीम देवी आदि विद्वान भी हिंदी भाषा में कविता लिखते थे। दूसरी तरफ बंगला और हिंदी का संबंध भी पुराना है। हिंदी और बंगला दोनों एक दूसरे से प्रभावित होते रहे हैं। रवींद्र नाथ के व्यक्तित्व और कृतित्व पर कबीर का प्रभाव स्पष्ट है। रवींद्र नाथ के सांस्कृतिक बहुलवाद का प्रारंभिक सूत्र कबीर के निर्गुण ब्रम्ह में दृष्टिगत होता है। हिंदी साहित्य के आधुनिक

*परिचय, अध्याय 6 के अनुरूप।

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)
GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA